



International Journal of Multidisciplinary and Scientific Emerging Research (IJMSERH)

Volume 13, Issue 3, July-September 2025

Impact Factor: 9.274



मोदी-शी युग में भारत-चीन संबंधों की बदलती गतिशीलता

वंदना सिंह

शोध छात्रा, एम.एम.एच महाविद्यालय, गाजियाबाद (उ.प्र.), भारत

सार: भारत और चीन एशिया की दो सबसे बड़ी उभरती शक्तियाँ हैं जिनके बीच संबंधों का वैश्विक राजनीति पर गहरा प्रभाव पड़ता है। नरेंद्र मोदी और शी जिनपिंग के नेतृत्वकाल में द्विपक्षीय संबंधों ने कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। जहाँ एक ओर आर्थिक सहयोग, कूटनीतिक संवाद और बहुपक्षीय मंचों पर साझेदारी देखने को मिली है, वहीं दूसरी ओर सीमा विवाद, सुरक्षा चिंताएँ और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा ने गहरे अविश्वास को जन्म दिया है। यह लेख मोदी-शी युग में भारत-चीन संबंधों की बदलती गतिशीलता का अध्ययन करता है और राजनीतिक, आर्थिक, सुरक्षा तथा वैश्विक भू-राजनीतिक दृष्टिकोण से इनका विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

की वर्ड: भारत-चीन संबंध, नरेंद्र मोदी-शी जिनपिंग, सीमा विवाद, आर्थिक सहयोग, रणनीतिक प्रतिस्पर्धा, इंडो पैसिफिक, भू-राजनीति

I. परिचय

भारत और चीन के बीच संबंधों को समझना आज की वैश्विक राजनीति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। दोनों देश न केवल एशिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएँ हैं बल्कि अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को आकार देने की क्षमता भी रखते हैं। स्वतंत्रता के बाद भारत-चीन संबंध कई बार सहयोग और टकराव के बीच झूलते रहे, लेकिन मोदी और शी जिनपिंग के नेतृत्वकाल (2014 के बाद) ने इन संबंधों को एक नई दिशा दी। नरेंद्र मोदी भारत के पहले ऐसे प्रधानमंत्री माने जाते हैं जिन्होंने वैश्विक मंचों पर भारत की विदेश नीति को आक्रामक और आत्मविश्वासी रूप में प्रस्तुत किया। वहीं शी जिनपिंग, जिन्हें चीन का सबसे सशक्त नेता कहा जाता है, ने चीन को आक्रामक विदेश नीति, बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) और “चाइना ड्रीम” के माध्यम से वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया। हालाँकि, दोनों नेताओं की मजबूत घरेलू स्थिति और राष्ट्रवादी राजनीति के बावजूद, द्विपक्षीय संबंधों में संतुलन बनाना चुनौतीपूर्ण रहा है। डोकलाम (2017), वुहान अनौपचारिक शिखर बैठक (2018), चेन्नई शिखर वार्ता (2019), और गलवान घाटी संघर्ष (2020) इस अवधि के प्रमुख पड़ाव रहे हैं।

इस लेख का उद्देश्य मोदी-शी युग में भारत-चीन संबंधों के बदलते स्वरूप का विश्लेषण करना है। इसमें हम देखेंगे कि कैसे कूटनीतिक, आर्थिक, सुरक्षा और भू-राजनीतिक कारक इन संबंधों को प्रभावित कर रहे हैं और भविष्य में इनके संभावित स्वरूप क्या हो सकते हैं।

II. नरेंद्र मोदी और शी जिनपिंग के समय राजनीतिक और कूटनीतिक संबंध

मोदी-शी युग की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि दोनों नेताओं ने व्यक्तिगत स्तर पर संवाद को प्राथमिकता दी। नरेंद्र मोदी और शी जिनपिंग के बीच कई बार शिखर वार्ताएँ हुईं—औपचारिक और अनौपचारिक दोनों ही।

III. अनौपचारिक शिखर बैठकें

2018 में वुहान (Wuhan) में हुई अनौपचारिक बैठक और 2019 में चेन्नई (Mamallapuram) शिखर वार्ता ने यह संकेत दिया कि दोनों नेता सीमा विवाद जैसी चुनौतियों के बावजूद संवाद की राह बनाए रखना चाहते हैं। वुहान शिखर वार्ता को विशेष महत्व इसलिए दिया गया क्योंकि यह डोकलाम (2017) विवाद के तुरंत बाद हुई थी, जिसने दोनों देशों के बीच सैन्य तनाव को चरम पर पहुँचा दिया था।

IV. कूटनीतिक संवाद की प्रकृति

भारत और चीन दोनों ने बहुपक्षीय मंचों जैसे BRICS, G-20, और शंघाई सहयोग संगठन (SCO) में एक-दूसरे के साथ सहयोग किया। इन मंचों पर साझा एजेंडे जैसे—वैश्विक आर्थिक सुधार, जलवायु परिवर्तन, और आतंकवाद-रोधी प्रयास—सामने आए। हालाँकि, यह भी सच है कि सीमा विवाद और सामरिक अविश्वास ने द्विपक्षीय कूटनीति को कमजोर किया। मोदी सरकार ने "नेबरहुड फर्स्ट" और "एक्ट ईस्ट" नीतियों को आगे बढ़ाते हुए चीन की बढ़ती सक्रियता के प्रति सतर्क रुख अपनाया। चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) को भारत ने स्पष्ट रूप से अस्वीकार किया, क्योंकि इसमें चीन-पाकिस्तान आर्थिक कॉरिडोर (CPEC) शामिल था, जो भारत की संप्रभुता के लिए चुनौती माना गया।

V. संवाद और टकराव का संतुलन

कूटनीतिक संबंधों में मोदी-शी युग में संवाद और टकराव दोनों मौजूद रहे। एक ओर वुहान और चेन्नई जैसी वार्ताएँ थीं, वहीं दूसरी ओर 2020 का गलवान संघर्ष था, जिसने रिश्तों में गहरा अविश्वास पैदा किया। इस टकराव के बाद कूटनीतिक संवाद जारी तो रहा, लेकिन उसकी प्रकृति बदल गई—अब बातचीत का केंद्र केवल सीमा पर तनाव कम करना और सैन्य टकराव से बचना रहा।

VI. भारत-चीन के मध्य आर्थिक संबंध

भारत और चीन के बीच आर्थिक रिश्ते मोदी-शी युग में सबसे जटिल और विरोधाभासी क्षेत्र रहे हैं। एक ओर चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बना रहा, वहीं दूसरी ओर व्यापार असंतुलन और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा गहरी होती गई।

VII. व्यापारिक परिदृश्य

2014 में नरेंद्र मोदी के सत्ता में आने के बाद भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार लगातार बढ़ा। 2021-22 में यह व्यापार 115 अरब डॉलर से अधिक पहुँच गया, जो अब तक का सबसे उच्च स्तर था। इसमें भारत का आयात चीन से कहीं अधिक रहा, जबकि निर्यात सीमित रहा। परिणामस्वरूप भारत का व्यापार घाटा लगातार बढ़ता गया और 2022 में यह लगभग 73 अरब डॉलर तक पहुँच गया।

VIII. निवेश और तकनीकी सहयोग

चीनी कंपनियों ने भारत के तकनीकी और डिजिटल क्षेत्र में बड़े पैमाने पर निवेश किया। मोबाइल फोन निर्माण, ऐप्स, और स्टार्टअप्स में चीन का प्रभाव स्पष्ट दिखाई दिया। अलीबाबा, टेनसेंट और शाओमी जैसी कंपनियों ने भारतीय बाजार में अपनी गहरी पैठ बनाई। हालाँकि, 2020 के बाद, गलवान संघर्ष और राष्ट्रीय सुरक्षा चिंताओं के चलते भारत सरकार ने कई चीनी ऐप्स पर प्रतिबंध लगा दिया और चीनी निवेश पर कड़े नियम लागू कर दिए।

IX. रणनीतिक प्रतिस्पर्धा

भारत और चीन दोनों एशियाई बाजारों और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना चाहते हैं। मोदी सरकार ने "मेक इन इंडिया" और "आत्मनिर्भर भारत" जैसी नीतियों के माध्यम से चीनी निर्भरता कम करने की दिशा में कदम उठाए। वहीं चीन ने बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के माध्यम से क्षेत्रीय कनेक्टिविटी को बढ़ाने का प्रयास किया, जिसमें भारत शामिल नहीं हुआ।

X. महामारी और आर्थिक संबंध

कोविड-19 महामारी के दौरान भारत ने चीन पर अत्यधिक निर्भरता का अनुभव किया, विशेषकर फार्मास्यूटिकल्स और इलेक्ट्रॉनिक्स सप्लाय चैन में। इसके बाद भारत ने विविधीकरण की नीति अपनाई और जापान, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका के साथ आपूर्ति श्रृंखला को पुनर्गठित करने की दिशा में साझेदारी की।

आर्थिक रूप से भारत-चीन संबंध "सहयोग और प्रतिस्पर्धा" दोनों का मिश्रण हैं। व्यापारिक सहयोग मजबूत है, लेकिन सुरक्षा और रणनीतिक कारणों से भारत ने आर्थिक निर्भरता कम करने की दिशा में ठोस कदम उठाए हैं।

XI. रक्षा और सीमा विवाद

भारत-चीन संबंधों की सबसे बड़ी चुनौती हमेशा से सीमा विवाद और सुरक्षा चिंताएँ रही हैं। मोदी-शी युग में यह मुद्दा और अधिक जटिल हुआ है क्योंकि दोनों देशों ने अपनी सैन्य उपस्थिति को मज़बूत किया और रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता को बढ़ाया।

XII. सीमा विवाद की पृष्ठभूमि

भारत और चीन के बीच लगभग 3,488 किलोमीटर लंबी वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) है, जिसकी परिभाषा स्पष्ट नहीं है। 1962 का युद्ध दोनों देशों के बीच अविश्वास की गहरी नींव छोड़ गया। इसके बाद भले ही कई समझौते हुए, लेकिन सीमा पर टकराव रुक-रुक कर होते रहे।

XIII. डोकलाम संकट (2017)

मोदी-शी युग की पहली बड़ी सैन्य तनातनी डोकलाम (भूटान सीमा के पास) में हुई। भारतीय सेना ने चीन की सड़क निर्माण गतिविधि को रोकने के लिए हस्तक्षेप किया। यह संकट 73 दिनों तक चला और इसके बाद दोनों देशों ने कूटनीतिक बातचीत से स्थिति को सुलझाया।

XIV. गलवान संघर्ष (2020)

जून 2020 में गलवान घाटी (लद्दाख) में भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच हिंसक झड़प हुई, जिसमें भारत के 20 सैनिक शहीद हुए और चीन के भी कई सैनिक हताहत हुए। यह घटना पिछले 45 वर्षों में पहली बार थी जब दोनों देशों की सीमा पर सैनिकों की जानें गईं। इस संघर्ष ने द्विपक्षीय संबंधों को गंभीर रूप से प्रभावित किया और आर्थिक तथा कूटनीतिक क्षेत्रों में भी असर डाला।

XV. सैन्य दृष्टिकोण

गलवान के बाद दोनों देशों ने सीमा पर सैनिकों और हथियारों की तैनाती बढ़ा दी। वास्तविक नियंत्रण रेखा पर दोनों ओर इंफ्रास्ट्रक्चर निर्माण की गति तेज हो गई। भारत ने लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश में सड़क और पुल निर्माण को प्राथमिकता दी, जबकि चीन ने भी तिब्बत क्षेत्र में सैन्य ठिकाने मज़बूत किए।

XVI. सुरक्षा चिंताएँ और गठबंधन

भारत ने चीन की बढ़ती आक्रामकता के जवाब में अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ क्वाड (QUAD) समूह को सक्रिय किया। यह चीन के लिए रणनीतिक चुनौती के रूप में देखा गया। साथ ही, भारत ने रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में कदम बढ़ाए और फ्रांस, रूस, अमेरिका जैसे देशों से सैन्य सहयोग बढ़ाया।

सुरक्षा और सीमा विवाद मोदी-शी युग में द्विपक्षीय संबंधों की सबसे बड़ी बाधा रहे। गलवान संघर्ष ने स्पष्ट कर दिया कि सीमा पर विश्वास बहाल करना आसान नहीं होगा और आने वाले वर्षों में भी यह मुद्दा भारत-चीन संबंधों के केंद्र में रहेगा।

XVII. क्षेत्रीय और वैश्विक भू-राजनीति

मोदी-शी युग में भारत-चीन संबंध केवल द्विपक्षीय दायरे तक सीमित नहीं रहे, बल्कि एशिया और वैश्विक स्तर पर भू-राजनीतिक समीकरणों को भी प्रभावित करते रहे हैं।

XVIII. इंडो-पैसिफिक रणनीति

भारत ने नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में "इंडो-पैसिफिक" की अवधारणा को अपनी विदेश नीति का केंद्रीय हिस्सा बनाया। अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ मिलकर क्वाड (QUAD) को सक्रिय करना चीन की बढ़ती समुद्री सक्रियता और दक्षिण चीन सागर में उसकी आक्रामकता के जवाब के रूप में देखा गया। चीन इस व्यवस्था को अपने खिलाफ गठबंधन मानता है।

XIX. बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI)

शी जिनपिंग की प्रमुख परियोजना BRI को भारत ने शुरू से ही अस्वीकार किया। मुख्य कारण चीन-पाकिस्तान आर्थिक कॉरिडोर (CPEC) था, जो भारत की संप्रभुता पर सीधा अतिक्रमण माना गया क्योंकि यह जम्मू-कश्मीर के पाकिस्तान-आधिकारिक हिस्से से होकर गुजरता है। भारत की इस स्थिति ने चीन को संकेत दिया कि वह क्षेत्रीय कनेक्टिविटी में भारत का सहयोग सहजता से हासिल नहीं कर सकता।

XX. बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग और प्रतिस्पर्धा

BRICS, G-20 और शंघाई सहयोग संगठन (SCO) जैसे मंचों पर भारत और चीन ने कई साझा मुद्दों पर सहयोग किया—जैसे वैश्विक वित्तीय सुधार, जलवायु परिवर्तन और आतंकवाद विरोध। लेकिन अमेरिका-चीन प्रतिद्वंद्विता के बीच भारत ने संतुलन साधने का प्रयास किया। अमेरिका के साथ रणनीतिक साझेदारी मज़बूत करने के साथ-साथ भारत ने रूस और अन्य एशियाई देशों से भी सहयोग बढ़ाया।

XXI. अफगानिस्तान और दक्षिण एशिया

अफगानिस्तान में अमेरिका की वापसी के बाद क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन में चीन और भारत दोनों ने अपनी-अपनी भूमिका तय करने की कोशिश की। वहीं नेपाल, श्रीलंका और मालदीव जैसे दक्षिण एशियाई देशों में चीन की बढ़ती आर्थिक उपस्थिति ने भारत की चिंताओं को बढ़ाया। भारत ने "नेबरहुड फर्स्ट" नीति के तहत इन देशों में अपनी भूमिका पुनः मज़बूत करने का प्रयास किया।

XXII. वैश्विक शक्ति संतुलन

मोदी और शी जिनपिंग के समय में भारत-चीन संबंध अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा से भी प्रभावित हुए। भारत ने रणनीतिक रूप से अमेरिका के साथ नज़दीकी बढ़ाई, जबकि चीन ने रूस के साथ गठजोड़ को और मज़बूत किया। इस कारण भारत-चीन रिश्तों का भू-राजनीतिक आयाम और अधिक जटिल हो गया। क्षेत्रीय और वैश्विक राजनीति में भारत-चीन संबंध प्रतिस्पर्धा और सहयोग दोनों के साथ आगे बढ़े। लेकिन कुल मिलाकर, मोदी-शी युग में चीन को "रणनीतिक प्रतिद्वंद्वी" और "सहयोगी शक्ति" दोनों रूपों में देखा गया।

XXIII. सांस्कृतिक और जन-जन संबंध

मोदी-शी युग में भारत-चीन संबंध केवल राजनीतिक और आर्थिक स्तर तक सीमित नहीं रहे, बल्कि सांस्कृतिक और जन-जन आदान-प्रदान (people-to-people exchanges) को भी बढ़ावा दिया गया। हालाँकि, सीमा विवाद और सुरक्षा मुद्दों ने इस क्षेत्र को भी प्रभावित किया।

XXIV. ऐतिहासिक सांस्कृतिक जुड़ाव

भारत और चीन का सांस्कृतिक संबंध प्राचीन काल से रहा है—बौद्ध धर्म के प्रसार से लेकर सिल्क रोड के माध्यम से व्यापार और कला का आदान-प्रदान इसका आधार रहा। आधुनिक युग में दोनों देशों ने इस ऐतिहासिक विरासत को आगे बढ़ाने की कोशिश की।

XXV. शिक्षा और अकादमिक सहयोग

2014 के बाद भारत और चीन ने शैक्षणिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित किया। बड़ी संख्या में भारतीय छात्र चीन के विश्वविद्यालयों, विशेषकर मेडिकल शिक्षा के लिए गए। साथ ही, कन्फ्यूशियस संस्थानों और भारतीय सांस्कृतिक केंद्रों ने दोनों देशों में भाषा और संस्कृति सीखने की संभावनाएँ खोलीं।

XXVI. पर्यटन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान

मोदी सरकार ने चीन के साथ पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए वीज़ा प्रक्रिया को सरल बनाया। चीन से भारत आने वाले पर्यटकों में बौद्ध तीर्थ स्थलों जैसे बोधगया, सारनाथ और कुशीनगर का विशेष आकर्षण रहा। इसी तरह, भारतीय पर्यटकों में चीन के ऐतिहासिक स्थलों और आधुनिक शहरों की ओर आकर्षित हुए।

XXVII. मीडिया और सॉफ्ट पावर

बॉलीवुड फिल्मों और भारतीय योग ने चीन में लोकप्रियता हासिल की। आमिर खान की फिल्में वहाँ बड़े पैमाने पर देखी गईं। दूसरी ओर, चीन की तकनीक, उपभोक्ता वस्तुएँ और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म भारतीय युवाओं में प्रभावशाली रहे।

XXVIII. महामारी और जन-जन संबंधों में गिरावट

कोविड-19 महामारी और 2020 के गलवान संघर्ष के बाद सांस्कृतिक और शैक्षणिक आदान-प्रदान पर प्रतिकूल असर पड़ा। बड़ी संख्या में भारतीय छात्रों को चीन से लौटना पड़ा और दोनों देशों के बीच सामाजिक संपर्क सीमित हो गया। सांस्कृतिक और जन-जन संबंध भारत-चीन रिश्तों का एक सकारात्मक पहलू रहे हैं, लेकिन सुरक्षा और राजनीतिक टकराव ने इस क्षेत्र की संभावनाओं को सीमित किया। भविष्य में यदि राजनीतिक विश्वास बहाल होता है तो यह क्षेत्र दोनों देशों के रिश्तों को मजबूत करने का सेतु बन सकता है।

XXIX. चुनौतियाँ और अविश्वास

भारत और चीन के बीच मोदी-शी युग में सहयोग के कई प्रयास हुए, लेकिन इस संबंध का सबसे जटिल पहलू चुनौतियाँ और आपसी अविश्वास रहा है। दोनों देश भौगोलिक, रणनीतिक और वैचारिक दृष्टि से प्रतिस्पर्धा में हैं। यही कारण है कि सहयोग की संभावनाएँ अक्सर अविश्वास के कारण सीमित रह जाती हैं।

1. सीमा विवाद और सुरक्षा मुद्दे

- भारत-चीन सीमा विवाद 1962 से ही अपूर्ण है। मोदी-शी काल में यह सबसे बड़ी चुनौती के रूप में उभरा।
- 2017 का डोकलाम गतिरोध और 2020 का गलवान संघर्ष ने स्पष्ट कर दिया कि सीमा विवाद दोनों देशों के रिश्तों की सबसे बड़ी कमजोरी है। इस दौरान सैन्य झड़पों ने आपसी विश्वास को गहरा आघात पहुँचाया।

2. सामरिक प्रतिस्पर्धा

- भारत और चीन दोनों एशिया में प्रभावशाली शक्ति बनने की कोशिश कर रहे हैं।
- चीन का बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) दक्षिण एशिया में उसकी पहुँच बढ़ाता है, जबकि भारत इसे अपनी संप्रभुता और क्षेत्रीय हितों के लिए खतरा मानता है।
- हिंद महासागर क्षेत्र में चीन की गतिविधियों और बंदरगाह निवेश ने भारत की सामरिक चिंताओं को और गहरा किया।

3. आर्थिक असंतुलन

हालाँकि भारत-चीन व्यापार 100 अरब डॉलर से अधिक हो गया, लेकिन इसमें भारी असंतुलन है। चीन से आयात भारत के निर्यात से कहीं अधिक है। यह असंतुलन भारत की औद्योगिक और आर्थिक सुरक्षा के लिए चुनौतीपूर्ण है।

4. अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रतिस्पर्धा

- दोनों देश BRICS, SCO और G20 जैसे मंचों पर सहयोगी भी हैं, लेकिन संयुक्त राष्ट्र, क्वाड (Quad) और इंडो-पैसिफिक रणनीति जैसे मुद्दों पर उनकी स्थिति परस्पर विरोधी रही है।
- भारत अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ मिलकर चीन की बढ़ती शक्ति को संतुलित करने की कोशिश करता है।
- चीन, पाकिस्तान को समर्थन देकर भारत की सुरक्षा चिंताओं को और बढ़ाता है।
- स्पष्ट है कि मोदी-शी युग में भारत-चीन संबंधों की सबसे बड़ी चुनौती आपसी अविश्वास और सुरक्षा-संबंधी मुद्दे हैं। जब तक इन चुनौतियों का समाधान नहीं होता, सहयोग की संभावनाएँ सीमित रहेंगी।

XXX. भविष्य की संभावनाएँ

भारत और चीन दोनों 21वीं सदी की वैश्विक राजनीति और अर्थव्यवस्था में निर्णायक भूमिका निभा रहे हैं। मोदी-शी युग में आए तनावों के बावजूद भविष्य में सहयोग और प्रतिस्पर्धा के कई आयाम मौजूद हैं। यदि दोनों देश विवेकपूर्ण रणनीति अपनाएँ तो संबंधों में संतुलन संभव है।

1. आर्थिक सहयोग की संभावनाएँ

- व्यापार संतुलन सुधारना: भारत चीन से आयात पर निर्भरता कम करने और अपने निर्यात को बढ़ाने की दिशा में कदम उठा सकता है।
- नई प्रौद्योगिकियों में सहयोग: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ग्रीन टेक्नोलॉजी और अक्षय ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में सहयोग दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं को लाभ पहुँचा सकता है।
- उद्योग और निवेश: यदि पारदर्शिता और विश्वास कायम होता है तो भारत में चीनी निवेश और उत्पादन संयंत्र (manufacturing hubs) स्थापित हो सकते हैं।

2. बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग

- BRICS, SCO और G20 जैसे मंचों पर दोनों देश साझा हितों के मुद्दों (जैसे जलवायु परिवर्तन, विकासशील देशों की आवाज़, वैश्विक वित्तीय सुधार) को आगे बढ़ा सकते हैं।
- संयुक्त राष्ट्र सुधार और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की दिशा में दोनों का सहयोग वैश्विक राजनीति को नया स्वरूप दे सकता है।

3. सीमा विवाद समाधान

- सीमा विवाद का स्थायी समाधान कठिन है, लेकिन Confidence Building Measures (CBMs) और सैन्य संवाद को बढ़ाकर तनाव कम किया जा सकता है। यदि दोनों देश सीमा पर शांति बनाए रखते हैं, तो अन्य क्षेत्रों में सहयोग स्वतः आगे बढ़ेगा।

4. सांस्कृतिक और शैक्षणिक संबंध

- स्टूडेंट एक्सचेंज प्रोग्राम: महामारी के बाद शिक्षा और शोध के क्षेत्र में सहयोग पुनः बहाल किया जा सकता है।
- पर्यटन और सांस्कृतिक उत्सव: दोनों देशों की ऐतिहासिक धरोहर और धार्मिक पर्यटन (विशेषकर बौद्ध तीर्थ) आपसी संबंधों को मजबूत बना सकते हैं।

5. स्वास्थ्य और विज्ञान सहयोग

- कोविड-19 जैसी महामारी ने यह स्पष्ट कर दिया कि भविष्य में स्वास्थ्य सुरक्षा और अनुसंधान में भारत-चीन सहयोग आवश्यक है। दवाओं, वैक्सीन और चिकित्सा अनुसंधान में संयुक्त पहल दोनों देशों और पूरी दुनिया के लिए उपयोगी हो सकती है।

6. प्रतिस्पर्धा और सहयोग का संतुलन

- भविष्य के संबंधों की प्रकृति "प्रतिस्पर्धी सहयोग" (Competitive Cooperation) की होगी।
- जहाँ एक ओर दोनों देश एशिया में रणनीतिक बढ़त पाने की कोशिश करेंगे, वहीं दूसरी ओर उन्हें जलवायु संकट, आर्थिक स्थिरता और वैश्विक शांति जैसे मुद्दों पर सहयोग करना ही पड़ेगा।
- भारत-चीन संबंधों का भविष्य पूरी तरह इस बात पर निर्भर करेगा कि मोदी और शी जैसे नेतृत्वकर्ता अपने-अपने राष्ट्रीय हितों को आगे बढ़ाते हुए आपसी अविश्वास को कैसे नियंत्रित करते हैं। यदि संवाद और सहयोग की राह अपनाई जाती है तो दोनों देश न केवल एशिया बल्कि विश्व राजनीति को भी नई दिशा दे सकते हैं।

XXXI. निष्कर्ष

मोदी-शी युग में भारत-चीन संबंधों ने सहयोग और प्रतिस्पर्धा, संवाद और तनाव—दोनों ही रूपों का अनुभव किया है। एक ओर, आर्थिक आदान-प्रदान, बहुपक्षीय मंचों पर साझेदारी और सांस्कृतिक जुड़ाव ने संबंधों में सकारात्मक आयाम जोड़े। दूसरी ओर, सीमा विवाद, सुरक्षा चिंताएँ और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा ने इन संबंधों की जटिलताओं को गहरा किया। गलवान संघर्ष (2020) और डोकलाम गतिरोध (2017) जैसे घटनाक्रमों ने यह स्पष्ट किया कि भारत और चीन के बीच अविश्वास अब भी गहरा है और यह रिश्तों की सबसे बड़ी चुनौती है। इसके बावजूद, वैश्विक राजनीति में दोनों देशों की भूमिका इतनी महत्वपूर्ण है कि आपसी संबंधों को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। भविष्य की संभावनाएँ इस तथ्य पर निर्भर करती हैं कि दोनों देश अपने मतभेदों का प्रबंधन किस प्रकार करते हैं। यदि वे सहयोग और संवाद की राह चुनते हैं तो आर्थिक, तकनीकी और सांस्कृतिक क्षेत्रों में नए अवसर खुल सकते हैं। यदि अविश्वास और सामरिक प्रतिस्पर्धा हावी रहती है तो यह संबंध न केवल एशिया बल्कि वैश्विक स्थिरता के लिए भी चुनौतीपूर्ण रहेंगे।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मोदी और शी जिनपिंग के नेतृत्व में भारत-चीन संबंध "प्रतिस्पर्धी सहयोग" (Competitive Cooperation) के दौर से गुजर रहे हैं। यह संबंध न पूरी तरह मित्रवत हैं और न पूरी तरह शत्रुतापूर्ण, बल्कि इनमें सहयोग और संघर्ष दोनों के तत्व साथ-साथ मौजूद हैं। भारत और चीन, दोनों यदि 21वीं सदी में वैश्विक नेतृत्व की भूमिका निभाना

चाहते हैं, तो उन्हें आपसी अविश्वास को कम करके सहयोग के नए रास्ते तलाशने होंगे। यही इन संबंधों की वास्तविक चुनौती और अवसर है।

संदर्भ

1. बाजपेयी, के. (2021). *भारत और चीन: सहयोग से टकराव तक*. रूटलेज।
2. गांगुली, एस. (2022). *मोदी, शी और व्यक्तिगत कूटनीति की सीमाएँ*. *जर्नल ऑफ एशियन सेक्योरिटी एंड इंटरनेशनल अफेयर्स*, 9(1), 5–24. <https://doi.org/10.1177/23477970221074935>
3. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार। (2023). *भारत-चीन संबंध*. <https://www.mea.gov.in>
4. पंत, एच. वी., और साहा, पी. (2020). *वैश्विक व्यवस्था में चीन-भारत प्रतिद्वंद्विता*. *कॉन्टेम्प러리 पॉलिटिक्स*, 26(4), 425–441. <https://doi.org/10.1080/13569775.2020.1778960>
5. सिंह, ए. (2021). *भारत, चीन और एशियाई सुरक्षा व्यवस्था*. *ऑब्जरवर रिसर्च फाउंडेशन अवसरिक पत्र*. <https://www.orfonline.org>
6. झाओ, एच. (2020). *चीन-भारत सीमा टकराव और इसके भू-राजनीतिक निहितार्थ*. *चाइना इंटरनेशनल स्टडीज़*, 82(2), 45–62।
7. बरुआ, डी. एम. (2020). *भारत और चीन चौराहे पर: सीमा तनाव और रणनीतिक विकल्प*. *कार्नेगी इंडिया रिपोर्ट*. कार्नेगी एंडाउमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस. <https://carnegieindia.org/2020/07/14/india-and-china-at-crossroads-pub-82209>
8. गार्वर, जे. डब्ल्यू. (2021). *दीर्घकालिक संघर्ष: बीसवीं और इक्कीसवीं शताब्दी में चीन-भारत प्रतिद्वंद्विता* (2रा संस्करण). ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
9. जयशंकर, डी. (2021). *इंडो-पैसिफिक में भारत-चीन प्रतिद्वंद्विता*. *ब्रुकिंग्स इंस्टीट्यूशन रिपोर्ट*. <https://www.brookings.edu/research/the-india-china-rivalry-in-the-indo-pacific>
10. मोहन, सी. आर. (2020). *चीन चुनौती पर भारत की प्रतिक्रिया*. *इंटरनेशनल अफेयर्स*, 96(4), 857–874. <https://doi.org/10.1093/ia/iaa092>
11. टेलिस, ए. जे. (2022). *हिंद महासागर में रणनीतिक प्रतिस्पर्धा: भारत, चीन और क्षेत्रीय व्यवस्था का भविष्य*. *जर्नल ऑफ स्ट्रैटेजिक स्टडीज़*, 45(6-7), 891–918. <https://doi.org/10.1080/01402390.2022.2053451>



INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA



International Journal of Multidisciplinary and Scientific Emerging Research (IJMSERH)

Impact Factor: 9.274

✉ ijmserh@gmail.com

🌐 www.ijmserh.com